

"मारदा-लिपि का एक —

(शोरदा लिपि का एक —

"रंति द्विभिक परिषय"

(रेतिहासिक परिचय)

मरदा-लिपि के काल-नियम

(शोरदा-लिपि के काल-नियम

के अविपूछ्य में प्रायः रुच द्वालुर के-

ने अविपूछ्य में प्रायः जाऊ द्वालुर के

प्रभागी—मारुता के नी नारउयी—

जाऊ के शास्त्रा के दृष्टि भगवीय

लिपि के विश्वामेन्द्र भुविभमत्तु —

लिपि के विश्वामेन्द्र भुविभमत्तु —

मानकर मंत्रेष्ठ कर लिया। नंका-मना-

मानकर हंसोष कर दिया। हंसा - महा -

वंस "उपर कल्प की राशउर्णिमी

वंस और कल्प की राजतरंगिमी

के माहौ के भुवार पर यजमान् —

के माहौ के आधार पर यह अवधि

न सुक्त है कि भेद भभार भभक

है भुवार के सौर्य रात्रि उड़ोल

रंसा पुच महारे मी माल के युग में

इस इव त्राई है रात्रि के युग में

कम्भीर की धार्मी में प्रष्टमिक रंसु-

प्रष्ट के धार्मी है माध्यमिक वैसु-

प्रष्ट के धार्मी है माध्यमिक वैसु-

के मान में बाही-लिपि कमीर की धार्मी

के मान में बाही-लिपि कमीर की धार्मी

में कर की परिषित है यकी धार्मी

में कर की परिषित है यकी धार्मी

भभार की भक्तियता के बलभुव

समार के बलभुव के बलभुव

ब्राह्मी-लिधि के अवसू ठी रासाकीय
ब्राह्म - लिधि को अवश्य ही राजसीय
महारा भूय कुआ देगा। उम उत्त-
प्रदेश त्राव हुआ होगा। इस तथ्य
का एंडिक्रामिक मानू गिलगित -
मैन-भृत्य के भूकासित छः ठगों में
स्टेट अधिकार के प्रत्युषात छः गांगे में
वर्कु भिलता हो।
ब्रह्मा निवाला है।

तुषाल-मामूल का
तुषाल - लालाज्य का
मामन के सुरीर में मातके उक -
झाप्तन वशीर में लालके उक
रक्त मुख दे। मामूर कलिष्क के -
रहा अल्ला है। रमार लिलक
युग में दी विसु देव-कु-राम की
सुग में ही लिले को-कु-राम की
सोराही-मंगाति का अुयरण कमीर
के थी - हजीति ला अक्षरन कशीर
की पाणी के विविध भूले यात्रा
की दाढ़ी के लिलू अस्यनो जया
अुंराले, पर भृत्य कुआ माना के
उत्तर चले, पर हृदय हुआ लहा के।
अुत्तर यर तुषाल-मामूल के मामके
अन यर हुए बाग - लालाज्य के लिलू के
एंडर देव-कु-राम के अुर्या दे ने
रम्पर, लिधिक उष बुद्ध के
भृत्य लिधि और उष के
पूर्वरों के ब्राह्मी की विकामित -
उच्चतों लो भ्राह्मी की विकामित
लिधि में उच्चरों के यात्रों पर उक्तेर
लिधि में ताँजे के घटे पर उक्तेर

कर भुवलिंग मुन्न पर गुप्त
 कर हस्तित स्थान पर दौद
 के रापा। राकुल मंडुरायन -
 के रहना। शहना छक्सोयन
 की भृत्य के किंमी उभ्र-भ्रा -
 की समता है उच्ची तासु - चट -
 के उकेरने के भरु ने विकमित
 बाही के भुवार पर सारदा की
 भवली के आधार पर आरक्ष वी
 लिधि के राम सिया है।
 (लिधि एवं जम विजा है)

राम के उपर्युक्त समक
 चीज के लौक शास्त्र
 ने रुमी 383 में कमीर के गोठम -
 ने इसी 383 में कमीर के गोठम
 मंथरेव के मारव रामराम बुला -
 संघरेव के छादर चीज देखा तुला -
 कर सारदा लिधि में लिपे गुरु
 के लिधि के लिए गुरु
 के रामी नाशा एवं लिधि में दुसुउ
 के चीजी भावा एवं लिधि में दुसुउ
 करने का काढनार भीया। रमा
 करने का काढनार भीया। रमा
 की शालीमती के "विनाशा-रामन"
 जी देखी छानी के लिया - देखीन के
 "अनिष्ट - केस में दुर्घट वम -
 अभिष्ट - लौक में आचार्य लौह -
 वरु निष्टुत, लौकर लियद रुह:-
 जन्म निष्टुत वरु जन्म लियद है:-
 "कमीरवैष्णवाधिक नीडि शिष्टः -
 "कमीरवैष्णवाधिक नीडि हिष्टः -
 भूये ममाये क्षितिं तिष्टः"

उम्मीदवारक मालू के छुठार
लघुपत्रक छाप्ते हैं और आधार
पर निष्कृत यज निकल भुड़ा है कि -
पर निष्कृत यज निकल आता है कि
भारता लिपि का अभिवृद्ध भुवन -
शारक लिपि का अस्तित्व आचार्य -
वभुवन के युग में भुवन पुचवती
वह बहुत के द्वारा हुआ है हुदूर बुड़ी चती
भय रक्षा होगा।
मध्य रक्षा होगा।

स्थान देश के द्विमुखी

जापान देश के द्विमुखी

विद्वार के परिमर के मंत्रकाल में
विद्वार के परिमर के मंत्रकाल में
"उष्णीक विशय रारिली" के गुरुमं
"उष्णीक विशय रारिली" के गुरुमं
कम्भीर की भारता वलमाला उप-
वासीन जी शारदा चतीसाला उप-
लब्ध कर्त्ता उपर जी काल नित्य
लक्ष्य है और इस जा लालनित्य
रंसा की खंचवी मती का ०८८ राया
इसा ली पाँचवी शती जा ठहराया -
गया हो। भास्म में भुवनेरित "कुथाल-
मामूर्ति" है। साथे में आयोजित "कुथाल-
मामूर्ति" की अउत्तराधीय भंगीधीके
छाप्तारा जी अन्तर्भूत होती है जो अन्तर्भूत के
परिमंत्रार में ५००(३००) गवर्ते हैं -
परिमंत्रार के ५००(३००) गवर्ते हैं -
भुवनेरि (Tessellated) के उम्मिल्प
मृठमूर्ति " ने लघुपत्रक
(Artifice) पर भुवनेरि भारता लिपिक
" " पर अस्ति शारदा लिपि न
भुवनेरि का भुवनेरि करके जीभका भय
अस्ति का भुवनेरि वरके इसका समय

रंभा की अमरी मड़ी का छोड़ा -

इसे वै दूधरी अती ला होना

भूमानिक ० ठराया है।

प्राज्ञातिक उहरापा है।

सीन रेम के मठाना

चीन देखा के अहान्

चौरु निकु दुड़ारु ने अपने
के हृषि भेद्यु

कभी अुवाम के दो वर्ष शिम-

अश्वीन आगे के एवं उष्ण

रोने विकार के गुड़ागार में

जैतेहृ विहार के गुणगार से

बितास उम गुड़ागार के पुमुके की

जलाए उम गुणगार के उसके बी

लिधि मारदा ढी थी, उम का -

लिधि अरदा ही थी, इस ले

मंकेत निकु दुड़ारु ने यादा

संकेत पिकु दुड़ारु ने अपने यादा

विवरण में प्रभुत करने वार किया है।

कभी जीवागम के मठाना

अश्वीन शीघ्रान के प्रदान

ठाषुकार दुर्याद नैमरामने रंभा की

अवस्था डोचार्य देसरज ने इस की

गुरालवी मड़ी में उम उष्टुके मधु

ग्यारह अती में इस सदय के स्वरू

किया है कि मिवभुद शिम मंकरथल

किया है कि शिवसूज जिल अंचरथल

(मंकर-उत्तुल) अुवका राष्ट्रन धर

(शिव-उत्तुल) अचल चट्टान धर

उकेर मिले हैं, वह लिधि ठी मारदा-

ठी रदी हैं।

रंभी यार द्वं भृती की

"इसी गयारही शाती ली

भवधि में भलिदि दू पुनुक के लोपक
अबै अलिदि उ स्वेक के लेखक
भलिदैनी के अथवी पुनुक में भारदा
अलिदैनी ने अदैनी उ स्वेक में भारदा
लिपि की विमर्श पुन्संभा की दू उठर

लिपि वी उ जाव इन्हें अनुर
लिपा दू कि क्रमीरी राजमानम -
जितना है अश्वामी "जनसान्ध"
जैम लिपि के सदू में भिन्न मात्रक
इस लिपि को श्वामी "जितनाटका"
के नाम में बुलाते दू
के नाम में बुलाते हैं

भारदा लिपि दू पुनुक के
शारदा लिपि के भुवन के
कारण कर्ण एक लिपियें के राज
कारण ली एक लिपियों के जन्म
रियादू, उनमें धुमाप दू :- डिब्बी, -
दिग्गी, उनमें इन्हें है :- तिच्चनी,
विद्धी, गुरुमायी, टाकरी, धारणी -
जोड़ी और उक्त एवं टाकरी दाकरी -
उठर नी राम-ए-कर उपलिपियां दू
ओर भी दास-ए-कर उपलिपियां हैं।

भारदा लिपि या उमके -

प्रवाक्तु रुद्री एवं धृतेष्वी के —
प्रवाक्ती भाजनी रूद्र छरेष्वी के —
भृषि कांस मिल्लालोप (Rock-inscription)
भृषि कांस (छिल्ला लेख) ॥ ॥ ॥
उठर मध्ययुग के उडिका भकार —
उठर सध्युग के इतिहासकार
उठर राम एवं मीवर के कथन के
जोनराज एवं श्रीराम के कथन के

VII

अनुभाव निरूपयुक्ति का गान
अनुभाव लिखित हो दिनांक १५ जून १९८१।
मारवाड़ के राजे-मठे सिलालेप
शासकों के रहे - होते सिलालेप
पश्चिमी-यंत्रर, रिहाई, शिभावल पू-
र्वम, लालूपाप और कांगड़ा के
देश, लालूपाप, और बरकीर के
निव-निव मुख्यलेख (मले दो)
भिज-भिज अचले (इसले हैं)

मारवाड़ लिखिका गौड़ियाम
शासकों के इतिहास
दो द्वारा वर्णन होता है।

निमिका लेपक

(ग्रन्थका लेपक)
सिलेक्ट नाव गंज,
मुक्ति-सुनिश्चित,
कानुनीर,
बहुजनीर.